gekj ;gk ijh{kk ugh gkrh g

सामान्य रूप से सभी स्कूलों में परीक्षा बच्चों के मूल्यांकन करने के लिए होती है। इस प्रक्रिया में स्कूल के शिक्षक एक प्रश्न पत्र तैयार करते है, जो निश्चित पाठ्यपुस्तक से होता है। जो बच्चा इन प्रश्नों को हल कर देता है उसे सफल घोषित करके दूसरी कक्षा में भेज दिया जाता है, जबकि वही अगर किसी की अवधारणाएँ स्पष्ट है, परन्तु किसी कारणवश इन प्रश्नों को हल नहीं कर पाता तो उसे असफल घोषित कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में सफल होने के लिए बच्चे शिक्षकों के द्वारा दिए गए कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को रट लेते हैं, इस तरह की व्यवस्था का परिणाम यह होता है, कि वो परीक्षा में सफल तो हो जाते हैं परन्तु शिक्षा का जो मुख्य उद्देश्य है वो पूरा नहीं हो पाता है।

परीक्षा में जिस बच्चे के अधिक अंक आते हैं उसे अच्छा बताया जाता है, वहीं जिस बच्चे के कम अंक आते है उसे कमजोर कहा जाता है, जिसके कारण बच्चे एक दूसरे से अधिक अंक लाने की होड में सदा लगे रहते है। इसका परिणाम यह होता है कि जब कभी बच्चे ये महसूस करते है, कि अब वो और

अधिक अंक नहीं ला सकते या फिर उनकी मेहनत व्यर्थ है तो वे पढ़ाई छोड़ देते है।

परीक्षा का एक प्रभाव बच्चों की मानसिकता पर भी पड़ता है, जब कभी भी बच्चों से उनकी परीक्षा के बारे में पूछा जाता है तो वे डर जाते है साथ ही वे हमेशा इस विषय को टालना चाहते है, परीक्षा के शुरू होने पर वे एक भय के वातावरण में जीते है, और जल्द से जल्द इसके खत्म होने का इंतजार करते है। परीक्षा के दौरान वे हमेशा अपने पाठ्य पुस्तक को लेकर बैठे रहते है और उसे रटते रहते है। इस प्रक्रिया के कुछ अपने ही नियम होते है जैसेः– प्रश्न पत्र को एक निश्चित समय के अदंर ही पूरा करना होता है, परीक्षा के दौरान दो बच्चे आस–पास नहीं बल्कि दूर बैठते है, बच्चों के प्रश्नपत्र हल करते वक्त कुछ शिक्षक उनके आस–पास टहलते रहते है, ताकि वे नकल न करने पाएँ।

इस पूरी प्रक्रिया में एक ऐसा माहौल तैयार होता है, जो किसी भी बच्चे को डरा देने वाला होता है और इसके परिणामस्वरूप बच्चे इस पूरी प्रक्रिया में एक गहरे मनोवैज्ञानिक दबाव से होकर गुजरते है और बच्चों की पूरी पढ़ाई का मुख्य उद्देश्य परीक्षा में पास करना ही रह जाता है।

"उदय सामुदायिक पाठशाला" में बच्चों की परीक्षा नहीं ली जाती है, बल्कि उनका मुल्यांकन हम हर रोज करते हैं, इस प्रक्रिया में हम बच्चों को काम दे देते है और फिर उन्हें देखते रहते है, कि कौन सा बच्चा क्या कर रहा है। बच्चा काम करने में किस जगह समस्या महसूस कर रहा है, जिस जगह बच्चे को समस्या आ रही है उस समस्या को सुलझाने का प्रयास शिक्षक और बच्चे मिलकर करते है, और जब तक समस्या हल न हो जाए तब तक इस पर काम किया जाता है। इस तरह अगले दिन की कार्ययोजना भी शिक्षक बच्चों की समस्या को ध्यान में रखकर ही बनाता है। इस तरह "उदय सामुदायिक पाठशाला" में बच्चों का मूल्यांकन हर रोज होता है, परन्तु वर्ष के अन्त में लिया जाने वाला मूल्यांकन समुदाय एवं स्कूल दोनों मिलकर लेते है। इस प्रक्रिया में समुदाय के लोगों को यह बता दिया जाता है कि बच्चों के साथ क्या काम किया गया है और वे (समुदाय एवं स्कूल) उसी के आधार पर बच्चों, शिक्षकों एवं पाठशाला का मूल्यांकन करते है।

gekjs ;gk¡ ijh{kk ugha gksrh gS